<u>मार्च माह के कृषि कार्य</u>

किसान बहिनों एवं भाईयों, नमस्कार ! मार्च माह जिसे आप फाल्गुन-चैत्र भी कहते हैं , महाशिव रात्री तथा होली के त्यौहार लेकर आता है तथा मौसम में रंग भर देता है । हम आपके प्रश्नों पर आधारित मार्च माह के कृषि कार्य बताएगें । लेख में नाप-तोल प्रति एकड के हिसाब से हैं ।

<u>तीन जरूरी बातें -</u>

- **फब्बारा सिंचाई (** ३०-७० प्रतिशत पानी बचत) - सिंचाई की विधि बलई मिट्टी, ऊची-नीची जमीन तथा कम पानी वाले क्षेत्रों में बहुत लाभदायक है । गेहूं, कपास, मूंगफली, तंबाकू, सब्जियां व फूलों की खेती में उपयुक्त हैं । पानी वर्षा की तरह गिरता है , पैदावार भी ज्यादा होती है व रोग कम लगते हैं ।
- **टपक सिंचाई (** ३०-७५ प्रतिशत पानी बचत) - सिंचाई की यह विधि दोमट मिट्टी, उथली मिट्टी, ऊची-नीची जमीन तथा पहाडी क्षेत्रों में काफी लाभदायक है । अंगूर, नींबू, गन्ना , पपीता, केला, अनार, अमरूद , अन्य फल व सब्जियों के लिए उपयुक्त है । पानी बूंद-बूंद करके गिरता है व पौधें की जडों तक पहुचता है । इससे रिसाव व वाष्पण ना के बराबर होता है । पानी के साथ खादें भी दी जा सकती हैं । इस विधि से ६०-८० प्रतिशत श्रम की बचत तथा पैदावार में काफी बढ़ोतरी होती है ।
- **कूड सिंचाई** (१५-३० प्रतिशत पानी बचत) - सिंचाई की इस प्रणली से भी अच्छी पैदावार मिल जाती है । मक्का व कपास में हर दूसरी कूड में पानी लगाकर ३० प्रतिशत पानी की बचत की जा सकती है । इससे उर्वरकों की दक्षता भी बढ़ती हैं ।

<u>शरदकालीन मक्का</u> - में झंडे आने पर बकाया नत्रजन (२ बोरे यूरिया) पौधें के तनों के पास डालें तथा मिट्टी चढ़ा दें ताकि फसल का गिरने से बचाव हो सके । इस अवस्था में 1 हल्की सिंचाई भी करें । बाद में २० दिन के अन्तर पर सिचाई करते रहें ।

<u>गेहूं</u> - की फसल फूल निकलने से लेकर दाने बनने की अवस्था में है । इस समय सिंचाई अवश्य करें नहीं तो पैदावार में भारी गिरावट आ सकती है । हल्की सिंचाई २० दिन के अन्तर पर करें । इससे गर्म हवाओं का दाने बनने पर बुरा असर कम होगा तथा तेज हवाओं से फसल गिरेगी भी नहीं । बीजाई के समय यदि बीजोपचार नहीं किया हैं तो मार्च माह में निम्नलिखित बीमारियां नजर आ सकती हैं - खुली कंगयारी में गेहूं की बालियां काले पाउडर में बदल जाती हैं । करनाल बंट में पौधें के दाने काले रंग का पाउडर बन जाते हैं जिनमें मछली जैसी गंध आती हैं । रोगी पोधों को सावधानीपूर्वक निकाल कर दूर जगह में जला दें । दोनों बीमारियों की रोगरोधी किस्में लगाएं तथा वैविस्टीन २ ग्राम और २ ग्राम थीरम प्रति कि.ग्रा. बीज के हिसाब से बीजोपचार करें । काला सिट्टा बीमारी में दानों का सिरा गहरा भूरा या काला हो जाता है । इसकी रोगथाम फूल आने से लेकर फसल पकने तक ८०० ग्राम जीनेव (डाइथेन जेड ७८) या मैनकोजेव (डाइथेन एम ४५) को २५० लीटर पानी में घोलकर १०-१५
दिन के अन्तर पर छिडकाव करें । ममनी व टुण्डु सूत्र कृमि रोग हैं इनमें पौधों के तनों का आधार फूल जाता हैं । रोगग्रस्त बालियां छोटी तथा मोटी हो जाती हैं । स्वस्थ्य दानों की जगह काले रंग की ममनियां बन जाती है जिनमें हजारों की संख्या में सुत्र कृमि होते हैं । पत्तों व वालियों पर पीले रंग का चिपचिपा लेसदार पदार्थ दिखई देता हैं । वालियां प्रायः मुडी हुई तथा बांझ होती है । रोकथाम सिर्फ बीजाई से पहले ही हो सकती हैं । बोने से पहले ममनी-रहित साफ बीज को पानी में अच्छी तरह धोकर बीजें । चेपा व तेला कीट भी गेहूं की पत्तियों व वालियों से रस चूसते हैं । १२ प्रतिशत वालियों या ऊपर के पत्तों पर १०-१२ चेपे का समूह नजर आयें तो ५०० मि.ली. एण्डोसल्फान ३५ ईसी या ४०० मि.ली. मैलाथियान ५० ईसी को २५० लीटर पानी में घोलकर फसल पर छिडकें ।

<u>बसंतकालीन गन्ना</u> - मार्च अंत तक बोया जा सकता हैं । गन्ने में शुरू में बढ़ोत्तरी धीमी होती है इसका लाभ उठाते हुए २ लाईनों के बीच 1 लाईन अल्प अवधि वाली वैशाखी मूंग, उर्द , लोबिया, भिंडी इत्यादि की मिश्रित फसल लगा सकते हैं । जिनके लिए अतिरिक्त खाद डालनी पडेगी । इससे अतिरिक्त फसल तो मिलती ही है तथा गन्ने में खरपतवार नियंत्रण भी रहता हैं । इन फसलों का उगाने की विधि पहले बता चुके हैं । गन्ने में दीमक, कनसुआ व जडवेधक से बचाव के लिए २.५ लीटर क्लोरपाइरिफास २० ईसी या १.५ लीटर एण्डोसल्फान ३५ ईसी का ८०० लीटर पानी में घोलकर छिडकाव करें । गन्ने की शरदकालीन व मोढ़ी फसल में १/३ नत्रजन की दूसरी किश्त (१ बोरा यूरिया) मार्च अन्त तक डाल सकते हैं । यूरिया डालने से पहले खरपतवार निकाल लें तथा हल्की सिंचाई १० दिन के अन्तर पर करते रहें ।

<u>जौ व अलसी</u> - मार्च माह में पक जाती है तथा पकते ही काट लें नहीं तो फसल झड जाती हैं तथा गिर भी जाती हैं । अधिक पैदावार के लिए दानों को बिखरने से रोकें ।

__ग्रीष्मकालीन मूंग__ - को मार्च में लगाया जा सकता है परन्तु सिंचाई की व्यवस्था होनी चाहिए । इसके लिए पूसा वैसाखी किस्म सर्वोत्तम है । जोकि ६५ दिनों में तथा बरसात आने से पहले पक जाती है और २.५ - ३ किंवटल पैदावार देती हैं । बाकी किस्मों में पी एस ७, पंत मूंग 1, मालवीय जागृति, आशा भी लगा सकते हैं । मार्च के बाद बोने से फसल जल्दी बरसात आने की स्थिति में खराब हो सकती हैं । जायद मूंग जितनी जल्दी लगे पैदावार उतनी ही जल्दी मिलती हैं । १० कि.ग्रा. स्वस्थ्य बीज को ४० ग्राम थीरम से उपचारित करने के बाद 1 पैकिट (२०० ग्राम) राइजोवियम जैव खाद से उपचारित करें । खेत तैयार करते समय १/३ बोरा यूरिया तथा २ बोरे सिंगल सुपर फास्फेट डालें । लाईनों में १० ईंच दूरी रखकर बीज बोयें फिर हल्का पलेवा लगा दें । २०-२२ दिन बाद पहली सिंचाई करें फिर १०-१५ दिन बाद हल्की सिंचाई जरूरत के हिसाब से करें । जब ७५ प्रतिशत फालियां पीली पडने लगें तो फसल कटने के लिए तैयार मानी जाती हैं । इसे दरांती से ध्यानपूर्वक काट कर ढ़ेर लगा दें तथा पूरा सूखने पर गहाई करें । फसल कटने में देरी से दाने विखर जाते हैं तथा कम पैदावार हाथ लगती हैं ।

__अरहर__ - सिंचित अवस्था में अरहर की टी-२१, यूपीएएस १२० किस्में मार्च में लगाई जा सकती हैं । इसके लिए अच्छे जल निकाल वाली दोमट से हल्की दोमट मिट्टी में दोहरी जुताई करके खरपतवार निकाल लें तथा १/३ बोरा यूरिया व २ बोरे सिंगल सुपर फासफेट डालकर सुहागा लगा दें । अरहर का ५-६ कि.ग्रा.स्वस्थ्य बीज लेकर राइजोवियम जैव खाद से उपचारित करके १६ ईंच दूर लाईनों में बोयें । अरहर की २ लाईनों के बीच यदि बैसाखी मूंग लगाना है तो दूरी २० ईंच कर लें । बीजाई के २५ और ४५ दिन बाद खरपतवारों की रोकथाम हेतु निराई-गुडाई करें । आवश्यतानुसार हल्की सिंचाई कर सकते हैं ।

__चना, मसर व दाना मटर__ - की फसलों में ७५ प्रतिशत फलियां व पत्ते पीले हो जाएं तथा पौधें सूखने लगे तो इन फसलों को दरांती से सावधानीपूर्वक काटें तथा ढ़ेर में रखें । पूरा सूखने पर गहाई करें इससे दाने बिखरते नहीं व पैदावार अधिक हाथ लगती हैं ।

__सूरजमुखी__ - के खेत में काफी नमी रहनी चाहिए तथा ३० दिन के अन्तर पर सिंचाई करते रहें इससे दूसरा फायदा कटुआ सुण्डी का पानी में डूबकर मर जाने का है । बालों वाली सुण्डी तथा कटुआ सुण्डी को १० कि.ग्रा. फैनवालरेट ०.४ प्रतिशत पाउडर के धुडे से भी नियंत्रित किया सकता हैं । फूल छेदक सुण्डी के लिए ५०० मि.ली. एण्डोसल्फान को २०० लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें ।

__आलू__ - पहाडी क्षेत्रों में आलू लगाने के लिए झुलसा रोग-रोधक कुफरी ज्योति किस्म उपयुक्त है । अच्छे जल निकाल वाली दोमट मिट्टी में बीजाई के समय 1 लीटर क्लोरपाइरीफास २५ ईसी को १० कि.ग्रा. रेत में मिलाकर डालने से दीमक से सुरक्षा रहती हैं । आलू के १०-१२ किवंटल मध्यम आकार के २-३ आंख वाले टुकडों को ०.२५ प्रतिशत एमीसान ६ के घोल में ६ घंटों तक डुबोएं । बीजाई के समय काफी नमी होनी चाहिए । खेत तैयार करते समय १० टन कम्पोस्ट, 1 बोरा यूरिया, २ बोरे डी ए पी तथा 1 बोरा पोटाशियम सल्फेट १० इंच दूर कूडों में डालकर मिट्टी से ढक दें फिर उपर बीज आलू के टुकडे ८ इंच की दूरी रखकर मिट्टी से ढक दें । खरपतवार नियंत्रण के लिए बीजाई के ४८ घंटों के अन्दर ५०० ग्राम आइसोप्रोटोन ७५ घुलनशील पाउडर ३०० लीटर पानी में घोलकर छिडकें । बारानी क्षेत्रों में नमी बनाएं रखने के लिए खेत पर खूखी घास बिछा दें ।

__चारा__ - रबी फसलों के कटने से खाली खेतों में निम्नलिखित चारा वाली फसलें लगा सकते हैं । ज्वार - की जे एस २०, एच सी १३६, एच एसी १७१, एच सी २६०, एच सी ३०८ किस्में १५० - २०० किंवटल हरा चारा देती हैं । इनके १५ कि.ग्रा. बीज को १० ईंच दूर लाईनों में लगाएं । बाजरा - की कोई भी किस्म के ३-४ कि.ग्रा. बीज को १२ ईंच दूर लाईनों में बोयें इससे ५०-५५ दिन बाद १६० किंवटल हरा चारा प्राप्त हो जाता हैं । दोनों फसलों में बीजाई के समय 1 बोरा यूरिया डालें तथा 1 महिने बाद आधा बोरा यूरिया और डाल दें । रेतीली मिट्टी में 1 बोरा सिंगल सुपर फासफेट भी बीजाई पर डालें । लोबिया - की एफ ओ एस 1, न. १०, एच एफ सी ४२-१, सी एस ८८ किस्में १००-१५० किंवटल हरा चारा २ महिनों में देती हैं । इनका १६-२० कि.ग्रा. बीज को राइजोवियम जैव खाद से उपचारित करने के बाद १२ ईंच दूर लाईनों बोयें । बीजाई पर आधा बोरा यूरिया तथा ३ बोरे सिंगल सुपर फासफेट डालें । संकर हाथी घास - की नेपियर बाजरा संकर -२१ किस्म सारा साल हरा चारा देती हैं । इसें जडों या तनों के टुकुडों द्वारा उगाया जाता हैं । २० ईंच लम्बे २-३ गाठों वाले ११००० टुकुडे प्रति एकड लगते हैं । आधा टुकडा जमीन में तथा आधा हवा में रखकर ३० ईंच लाईनों में तथा २४ ईंच पौधें में दूरी रखें । रोपाई से पहले खेते में २० गाडी सडे-गले गोबर की खाद दें । हर कटाई के बाद 1 बोरा यूरिया डालें । गर्मियों में १०-१५ दिन के अन्तर पर सिंचाई करते रहें ।

__फल__ - बागों में अधिकतर पेड लगाने, काट-छांट व खाद-पानी देने का कार्य पूरा हो चुका है यदि नहीं तो शीघ्र कर लीजिए । मार्च में बागों में पानी जरूर दें । बेर के बीज भी मार्च में नर्सरी में बोये जा सकते हैं । आम के बागों में मिलिबग, तना छेदक व आम का तेला (हापर) के नियंत्रण के लिए मिथाइल पैराथियान प्रयोग करें । आम में ब्लैक टिप रोग ईट के भट्ठों की जहरीली गैस के कारण होता हैं । इससे फल बेढगे तथा पहले पक जाते हैं जिनका एक सिरा काला होता हैं । रोगथाम के लिए वोर्डो मिश्रण **(4:4:50)** या ०.३

प्रतिशत कोपर आक्सीक्लोराइड -५० का स्प्रे करें । आम तथा लीचियों के बागों में सिंचाई समय-समय पर करते रहें इससे फल पैदावार अच्छी होगी । तरबूज व खरबूज भी मार्च में लगा सकते हैं ।

<u>सब्जियां</u> - मार्च के पहले हफ्ते तक घिया, कद्दू, करेला, तोरी, भिडी लगा सकते हैं । लगाने की कृषि क्रियाएं फरवरी में बता चुके हैं । पिछले माह लगी फसलों में आधा बोरा यूरिया डालें तथा हर हफ्ते एक अच्छी सिंचाई करते रहें इससे समय पर फूल तथा काफी मात्रा में फल आएगें । यदि पाधों पर पाउडरी मिल्डयु (पत्तों पर सफेद पाउडर) नजर आए तो २०० ग्राम वैविस्टिन को २०० लीटर पानी में घोलकर स्प्रे करें । डाउनी मिल्डयु (पत्तों की निचली सतह पर बैंगनी - भूरे रंग के धब्बे) के लिए ४०० ग्राम डाइथेन एम ४५ को २०० लीटर पानी में घोलकर छिडकें । स्प्रे १५ दिन बाद फिर दोहराएं । इस मौसम में कीडे कम ही लगते हैं फिर भी कोई नजर आयें तो २०० ग्राम एण्डोसल्फान ३५ ईसी १०० लीटर पानी में घोलकर फसल पर स्प्रे करें । उपरोक्त स्प्रे खरबूज व तरवूज फलों की बेलों पर भी किया जा सकता हैं । बैगन व टमाटर - की नर्सरी जो फरवरी में लगाई थी अब रोपाई के लिए तैयार हैं । बाकी क्रियायें पिछले लेखों में दी हैं । रोपाई के तुरंत बाद सिंचाई करें । पुरानी फसल में हफ्ते में एक बार सिंचाई अवश्य करें । फल छेदक नियंत्रण के लिए १०० मि.ली. एण्डोसल्फान ३५ ईसी या २०० मि.ली. मैलाथियान २०० लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करें । हमेशा दवाई छिडकने से पहले फल तोड लें ।

<u>अदरक</u> - मार्च माह में अदरक के ५ कि.ग्रा. स्वस्थ कंदों को १८ ईंच लाईनों में तथा १२ इंच पौधों में दूरी रखकर लगाएं । खेत तैयारी पर १० टन कम्पोस्ट, 1 बोरा यूरिया, 1 बोरा डी ए पी तथा 1 बोरा पोटाशियम सल्फेट डालें । २ महिने बाद 1 बोरा यूरिया गुडाई के समय दें ।

<u>मशरूम</u> - उगाने के लिए हल्के भीगे साफ गेहूं के भूसे या धान के पुआल में खुम्भ के बीज डालने से ३-४ सप्ताह बाद खुम्भ तोडने लायक हो जाते हैं । मशरूम उगाना बहुत आसान है तथा काफी आमदनी देती हैं ।

फूल - बंसत ऋतु आने पर चारों तरफ फूलों की बहार छाई हुई हैं । फूलों के राजा गुलाब तो पूरी मस्ती पर हैं । गलेडियोलस भी निखार पर है । फूलों की सुंदरता का आंनद लें तथा पैसा भी कमाएं ।गर्मी वालें फूलों की बीजाई भी इस माह पूरी कर लें । इनमें प्रमुख हैं - बालसम, फ्रैच गैंदा, पेट्रूनिया, पोरचुलाका, साल्विया, सुरजमुखी, जिनियां, वरवीना इत्यादि । बीजाई के बार नियमित रूप से नर्सरी की सिंचाई करते रहे तथा निराई-गोडाई करके खरपतवार निकाल दें । फूलदार पेड व झाडिया तथा हैज लगाना पूरा कर लें । मई-जून में लगने वाले घास के लान की जमीन तैयारी भी मार्च से शुरू कर दें ।

किसान बहिनों - भाईयों मार्च के बाकी कृषि क्रियाओं के बारे में जानकारी हमसे सीधा फोन (०१२०-२५३५६२८) से अथवा ई-मेल: **wsguleria@kribhco.net** से भी संपर्क कर सकते है । यह लेख हमारे इस श्रृखला (२००४-०५) का आखिरी लेख है फिर भी आप अपनी समस्याओं के समाधान के लिए हमसे उपरोक्त पते पर संपर्क कर सकते हैं, इससे हमें खुखी होगी । आपके सहयोग के लिए धन्यवाद । जयहिंद !